''कार्यषील महिलाओं के बालक–बालिकाओं के शैक्षिक–आकांक्षा स्तर, तथा शैक्षिक निष्पत्ति का तुलनात्मक अध्ययन।'

Sangeeta Negi Assistant Professor Malini Valley College of Education Kotdwar

प्राचीन काल में मनुष्य संतुलित तथा सीधा–सादा था। मानव–जीवन का प्रत्येक पहलु एक–दूसरे से जुड़े होने के कारण, इनका इकट्ठा अध्ययन किया जाता था। उस समय राजनीतिक मानव–जीवन के सीमित रूप से प्रभावित किया करती थी। व्यक्ति धर्मनिष्ठ तथा विवेकी होने के कारण शुभचिन्तक के रूप में परस्पर व्यवहार किया करते थे। उस समय न दण्ड था, न दण्ड देने वाला, न शोषक था न शोषित। ऐसी स्थिति में जब राज्य ही नहीं था तो उस समय के विचारकों ने राजनीतिक के किसी सिद्धान्त की आवश्यकता ही महसूस नहीं की। परन्तु धीरे–धीरे अत्याचार, अधर्म, काम, क्रोध, लोभ व शोषण बढ़ा तब राज्य रूपी संस्था का विकास के साथ ही उस काल के दार्शनिकों ने राजा, राज्य और प्रजा के सम्बन्धों को निर्धारित किया। उस समय राजा शान्ति–व्यवस्था के साथ–साथ, लोगों को धर्माचरण के लिए प्रेरित किया करता था। इस समय के विचारकों जिन सिद्धान्तों की रचना की उनका लक्ष्य, श्रेष्ठ जीवन मूल्यों की स्थापना करना तथा उन मूल्यों को तोड़ने वालों को, दण्डित करने के लिए राजा के सक्षम बनाना था। राजा सामाजिक जीवन में आने वाली बाधाओं को दूर किया करता था, वह आर्थिक, राजनीतिक व धार्मिक जीवन में कोई हस्तक्षेप नहीं किया करता था। प्राचीन काल से लेकर, आधुनिक युग तक भारत के विचारक ऐसे ही राज्य के सम्बंध में सिद्धान्तों की रचना करते रहे। इन परिवर्तनों ने क्षेत्र की सामाजिक संरचना को हमेशा से ही प्रभावित किया है। ये परिवर्तन समाज के राजनीतिक, आर्थिक तथा सांस्कृतिक जीवन पर कुछ न कुछ प्रभाव डालते हैं। समाज की संरचना का निमार्ण सामाजिक सम्बन्धों, संस्थाओं, प्रतिमानों एवं व्यक्तियों द्वारा ग्रहण किये गये पदों एवं भूमिकाओं रूपी इकाइयों से होता है। आज सामाजिक ढांचे में नारी को शिक्षा द्वारा सशक्त बनाने की बात कही जा रही है। नारी शिक्षा इस देश की महती आवश्यकता है। गांधी जी ने कहा था कि – ''एक लड़की की शिक्षा एक लड़के की शिक्षा की अपेक्षा अधिक महत्वपूर्ण है क्योंकि लड़के को शिक्षित करने का वह अकेला शिक्षित होता है किन्तु एक लड़की की शिक्षा से पूरा परिवार शिक्षित हो जाता है।'' भारत में उन्नीसवीं सदी के अंतिम चरण में आर्थिक क्षेत्र, व्यवसाय एवं व्यापार में महिलाओं का स्थान महत्वपूर्ण बनता जा रहा है। आज महिला आत्म गौरव एवं आर्थिक स्वतंत्रता प्राप्त करने हेतु रोजगार में प्रवेश करके आत्मनिर्भर बनना आवश्यक समझने लगी हैं महिलाओं को जहाँ इससे आर्थिक एवं मनोवैज्ञानिक संतुष्टि मिलती है। वहीं पारिवारिक आय में अपना योगदान कर पाती है। बढ़ती शिक्षा जागृति, तकनीकी एवं व्यावसायिक प्रशिक्षण सुविधायें, मंहगाई जनित दबाव, बहुमुखी प्रभाव, समाज का बदलता दृष्टिकोण इन सब कारणों से ही नहीं शिक्षा की उपयोगिता और उन्नत रहन– सहन की आज कामकाजी स्त्रियों की सामाजिक स्वीकृति बढी है वहीं उनकी व्यावसायिक कार्य प्रणालियों का प्रभाव उनके व्यक्तिगत, एवं पारिवारिक जीवन तथा अन्तःक्रियात्मक सम्बन्धों पर पड़ रहा है। फलतः स्त्रियों के समक्ष व्यावसायिक एवं पारिवारिक भूमिका के निर्वाह में कठिनाईयां, समस्याएं

उत्पन्न हो रही हैं। जैसे बच्चों का दायित्व, घर और दफ्तर का सामांजस्य, समाज का नौकरीपेशा महिलाओं के आत्मनिर्भर होने पर उनकी आमदनी पर पति का नियंत्रण इत्यादि । व्यवसाय या जीविका का मानव जीवन में महत्वपूर्ण स्थान है। व्यवसाय मानव को जीवन यापन का साधन ही प्रदान नहीं करता अपितु उचित व्यवसाय में स्थान मिलने पर मानव को आत्म संतुष्टि प्राप्त होती है तथा उसमें आत्म बल का संचार होता है। मानव जीवन में सामाजिक, मनोवैज्ञानिक तथा आत्म निर्भरता की दृष्टि से व्यवसाय का महत्वपूर्ण स्थान है। समाज में उन नवयुवकों को सम्मानीय दृष्टि से देखा जाता है जो अध्ययन समाप्त करके जीविकोपार्जन कर आत्म निर्भर बनने में प्रयत्नशील है। मानव जीवन का उद्देश्य स्वयं को समृद्ध एवं सुखी बनाते हुए समाज, राष्ट्र व संस्कृति को विकसित एवं अक्षुण्ण बनाने से है। मानव विवकेशील है अतः उनके जीवन की शैली कुछ विशिष्टता लिये हुए होती है। शिक्षा मनुष्य में पूर्णता की अभिव्यक्ति है, शिक्षा के द्वारा इच्छाशक्ति में सार्थक नियंत्रण हो सकता है। शिक्षा व्यक्तियों का निर्माण करती है। चरित्र को उत्तम उत्कृष्ट बनाती है और व्यक्ति को संस्कारित करती है। भारतीय समाज में प्राचीन काल से ही महिलाओं को समाज का अभिन्न अंग माना जाता रहा है क्योंकि वह उत्कृष्ट व्यक्तियों व बौद्धिकता की खोज के जिम्मेदार होते हैं।

महिला को अपनी भूमिका अति महत्वपूर्ण बनाने के लिए संवेगात्मक और व्यवसायिक रूप से सन्तुष्ट होना चाहिए। जीवन की गुणवत्ता और कार्य सन्तुष्टि का अनुभव न केवल कौशल, सोच, संवेगात्मक प्रतिक्रिया बल्कि पूरे व्यवहार को प्रभावित करता है और पूरी जीवन प्रक्रिया को भी प्रभावित करता है। अतः कहा जा सकता है कि मानव समाज व देश की उन्नति महिलाओं पर ही निर्भर है। आज का युग वैज्ञानिक व तकनीकी युग है। महिलाओं की स्थिति में गिरावट आई है। जैसे उनकी सेवा शर्तों में गिरावट, एकाकीपन जिसमें कार्य करते है जीवन का असाधारण विस्तार, व्यवसायिक प्रशिक्षण का स्तर आदि। वर्तमान समय प्रतिस्पर्धा युक्त समय है। कोई भी चुनौती जिससे बचने या रक्षा की करने की योग्यता की कमी व्यक्ति में व्यवसायिक तनाव उत्पन्न करती है। आज महिलाओं का दृष्टिकोण अपनी जीवन शैली, अपने परिवार, अपनी सामाजिक भूमिका आदि के प्रति व्यापक रूप से परिवर्तित हुआ है। महिलाओं की तथा परिवर्तित होते दृष्टिकोण ने उनके धार्मिक संस्कारों पर भी महत्वपूर्ण प्रभाव डाला है । नवीन वैज्ञानिक, आधुनिक एवं विशेषताओं का प्रभुत्व बढ़ता जा रहा है। जिसमें संस्कृतिकरण, पश्चिमीकरण, लौकिकीकरण, वैज्ञानिक दृष्टिकोंण आदि मुख्य है जिससे जाति प्रथा का प्रभाव निरन्तर कम हो रहा है। वर्ग व्यवस्था का प्रचलन बढ़ रहा है, संयुक्त परिवार टूट रहे हैं। केन्द्रीय परिवारों की संख्या में दिन प्रतिदिन वृद्धि हो रही है। व्यक्तिगत आदर्श को बढ़ावा मिल रहा है। धन का महत्व बढ़ रहा है, परिवार का परम्परागत सुदृढ़ एवं स्थायी आधार कम होता जा रहा है। महिलाओं की भी आंकाक्षाएं होती हैं कि वक अपने बच्चों को सर्व सुलभ साधन शिक्षा उपलब्ध कराने में अपना सहयोग दें इस आकांक्षा से बहुत सी महिलाएं विभिन्न क्षेत्रों में कार्य करती हैं।

आकांक्षा स्तर का आधार वास्तव में अमूर्त चिन्तन से संबंधित है। विद्यार्थियों के आकांक्षा स्तर के माध्यम से उनकी व्यावसायिक अभिरूचि पर पड़ने वाले प्रभावों को जाना जा सकता है क्योंकि व्यक्ति के आकांक्षा स्तर का मापन करने से हमें उस व्यक्ति की अमूर्त बुद्धि के बारे में पता चलता है। प्रायः यह माना जाता है कि जिस व्यक्ति का आकांक्षा स्तर

जितना ऊँचा होगा, उसकी अमूर्त बुद्धि उतनी ही तीक्ष्ण होगी और वह अपनी अभिरूचि के अनुसार विभिन्न प्रकार के कार्य करने में सक्षम होगा। शिक्षा एक ऐसी प्रक्रिया है जो जीवनपर्यन्त चलती है और जीवन के प्रत्येक अनुभव से उसमें वृद्धि होती है। इस प्रकार शिक्षा का क्षेत्र अत्यंत व्यापक है।

शैक्षिक निष्पत्ति के ज्ञान से बालक की भावी योजनाओं के विकास एवं सुधार के लिए सार्थक प्रयास किया जा सकता है।

यहाँ पर शैक्षिक निष्पत्ति से तात्पर्य – छात्र अपने विद्यालयी विषयों की होने वाली परीक्षा में कितना अंक प्राप्त किया, उसके द्वारा प्राप्त अंको के आधार पर ही शैक्षिक निष्पत्ति का मापन होता है।

रेमर्स एवं गेज के अनुसार, ''शैक्षिक निष्पत्ति से छात्र विद्यालय द्वारा निर्धारित उद्देश्यों की ओर बढ़ते हैं। जिसमें पाठ्यक्रम के माध्यम से छात्रों के व्यवहार में सुधार किया जाता है।''

एस0 एस0 माथुर के अनुसार, ''एक निश्चित कार्य क्षेत्र में जो ज्ञान अर्जित किया जाता है वह उपलब्धि के रूप में सामने आता है।''

बालक देश के भाग्य निर्माता है उसके आन्तरिक गुणों, अंर्तनिहित शक्तियों को प्रकटन तथा मूल्य प्रवृत्तियों का शोधन–परिमार्जन शिक्षा द्वारा ही संभव है।

किसी भी राष्ट्र की समृद्धि एवं विकास में वहां के जिम्मेदार नागरिकों, सफल व्यवसायी और अपने कार्य में कुशल भिन्न–भिन्न क्षेत्रों में कार्य कर रहे व्यक्तियों के योगदान पर निर्भर होता है, जो राष्ट्र जितना अधिक धन उत्पन्न करने का श्रोत बनाता है एवं जिस राष्ट्र के पास अधिक आर्थिक संसाधन होता है वह राष्ट्र उतना ही अधिक समृद्ध एवं विकसित होता है।

अध्ययन की आवश्यकता– शिक्षा का प्रमुख उद्देश्य व्यक्ति का सर्वांगीण विकास करना है। जिसके फलस्वरूप व्यक्ति के मन, बुद्धि एवं आत्मा के विकास के साथ–साथ आत्मनिर्भरता एवं स्वावलम्बन का गुण भी जन्म लेता है। जो कि जीविको– पार्जन के लिए अत्यन्त ही आवश्यक है। हम समस्याओं के निराकरण के साधनों का प्रयोग करते हुए समुचित ढ़ंग से जीविकापार्जन करते हैं। भारतीय परिवेश में अत्याधिक महत्वपूर्ण विषय सभी बच्चों को समुचित शैक्षिक अवसर प्रदान करना है। यद्यपि भारत में विभिन्न कार्यक्रमों के द्वारा सभी वर्गो के बच्चों को शिक्षित करने के प्रयास जारी है। फिर भी सभी को अधिकतम शिक्षा प्राप्त करने के अवसर नहीं मिल पा रहे हैं। शिक्षा द्वारा व्यक्ति अपने को इस योग्य बनाने का प्रयास करता है कि वह अपने जीवन का निर्वाह समुचित ढ़ंग से कर सके कार्मिक वर्ग देश की समृद्धि की रीढ़ का कार्य करते हैं जिन पर विकास का समस्त ढ़ांचा टिका हुआ है। समस्त उद्योग, कल–कारखाने कर्मचारियों के बलबूते टिका होता है। उद्योगों को चलाने के लिए प्रमुख संसाधन कर्मिक वर्ग होता है। कर्मिक वर्ग विभिन्न क्षेत्रों से रोजगार के लिए आते हैं, कुछ स्थानीय होते हैं तथा कुछ अन्य शहरों अथवा प्रांतों से भी संबंधित होते हैं, ये अपनी शिक्षा एवं योग्यता के आधार पर कार्यो में लगे होते हैं।

वर्तमान समय में उद्योगों का विस्तार बड़े पैमाने पर हुआ है। उत्तराखण्ड में भगवानपुर, रूद्रपुर, रूड़की, हरिद्धार, देहरादून आदि उद्योग नगरी के रूप में प्रसिद्ध हैं। उद्योगों में जो भी व्यक्ति कार्यरत हैं वे आर्थिक एवं सामाजिक परिस्थिति पर भिन्नता लिए

हुए है, जिनमें कुछ व्यक्ति उच्च पद–परिस्थिति में, कुछ मध्यम पद–परिस्थिति में तथा शेष निम्न पद–परिस्थिति में हैं। ऐसी स्थिति में उनके बच्चों के शैक्षिक आकांक्षा स्तर एवं योग्यता में भी भिन्नता देखने को मिलती है। इसीलिए इस क्षेत्र में अध्ययन की नितांत आवश्यकता है।

शोध अध्ययन के उद्देश्य

प्रस्तुत शोध अध्ययन के उद्देश्य निम्नवत् हैं।

1. कार्यशील महिलाओं के बालक–बालिकाओं की शैक्षिक–आकांक्षा स्तर का तुलनात्मक अध्ययन करना।
2. कार्यशील महिलाओं के लोगों के बालक–बालिकाओं की शैक्षिक निष्पत्ति का तुलनात्मक अध्ययन करना।

शोध परिकल्पना

प्रस्तुत शोध अध्ययन के लिए निम्न परिकल्पनाएं निर्मित की गई हैं।

1. कार्यशील महिलाओं के बालक–बालिकाओं की शैक्षिक–आकांक्षा स्तर में कोई सार्थक अंतर नहीं है। इस मुख्य परिकल्पना की तीन उप–परिकल्पनाएं निर्मित की गई हैं –

i) उच्च एवं मध्य आय वर्ग की कार्यशील महिलाओं के बालक–बालिकाओं की शैक्षिक आकांक्षा स्तर अवधारणा में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

ii) उच्च एवं निम्न आय वर्ग की कार्यशील महिलाओं के बालक–बालिकाओं की शैक्षिक आकांक्षा स्तर अवधारणा में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

iii) मध्य एवं निम्न आय वर्ग की कार्यशील महिलाओं के बालक–बालिकाओं की शैक्षिक आकांक्षा स्तर अवधारणा में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

5. कार्यशील महिलाओं के लोगों के बालक–बालिकाओं की शैक्षिक निष्पत्ति में कोई सार्थक अंतर नहीं है। इस मुख्य परिकल्पना की तीन उप–परिकल्पनाएं निर्मित की गई हैं –

i) उच्च एवं मध्य आय वर्ग की कार्यशील महिलाओं के बालक–बालिकाओं की शैक्षिक निष्पत्ति में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

ii) उच्च एवं निम्न आय वर्ग की कार्यशील महिलाओं के बालक–बालिकाओं की शैक्षिक निष्पत्ति में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

iii) मध्य एवं निम्न आय वर्ग की कार्यशील महिलाओं के बालक–बालिकाओं की शैक्षिक निष्पत्ति में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

शोध अध्ययन का सीमांकन

शोध अध्ययन की समस्या एवं शोध उद्देश्य निर्धारण के पश्चात् अध्ययन का सीमाकंन किया जाता है चूंकि समस्या का क्षेत्र बहुत ही विस्तृत है अतः सीमित अवधि, साधन एवं सुविधाओं में इसका अध्ययन संभव नहीं है।

अतः समय साधन एवं सुविधाओं को दृष्टिकोण रखते हुए अध्ययन की सीमा का निर्धारण किया गया है।

प्रस्तुत शोध अध्ययन को निम्नलिखित बिन्दुओं में परिसीमित किया गया है।

1. विभिन्न उद्योग सम्पूर्ण देश में जगह–जगह स्थापित हैं जिनका सम्पूर्ण अध्ययन संभव नहीं है। अतः शोधकर्ता ने उत्तराखण्ड प्रदेश का चयन किया है, और उसमें देहरादून क्षेत्र को चुना है क्योंकि वह विभिन्न उद्योगों का एकमात्र ऐसा केन्द्र हैं जहाँ से विभिन्न प्रकार की निर्मित वस्तुओं का भारत में ही नहीं बल्कि अमेरिका, ब्रिटेन, पश्चिमी एशिया आदि देशों को निर्यात किया जाता है।
2. न्यादर्श के रूप में कार्यशील महिलाओं के बालक–बालिकाओं का चयन किया गया है, जिनकी संख्या 100 निर्धारित की गयी है।
3. बालक–बालिकाओं में वरिष्ठ माध्यमिक स्तर के ही छात्र–छात्राओं को चयन किया गया है

शैक्षिक आकांक्षा स्तर मापनी डॉ. वी.पी. शर्मा एवं डॉ. अनुराधा गुप्ता द्वारा निर्मित शैक्षिक आकांक्षा स्तर मापनी का प्रयोग किया है।

शैक्षिक निष्पत्ति

शैक्षिक निष्पत्ति के परीक्षण हेतु बालक बालिकाओं द्वारा उत्तीर्ण की गयी हाईस्कूल परीक्षा के अंकों को परीक्षण हेतु लिया गया है, जो उत्तराखण्ड में माध्यमिक शिक्षा परिषद् की 2018 की परीक्षा में प्राप्त किये गये हैं।

न्यादर्श

प्रस्तुत अध्ययन में हरिद्वार जिले में उद्योगों से सम्बन्ध कार्यशील महिलाओं के 200 छात्र–छात्राओं के न्यादर्श पर केन्द्रित है। देहरादून जिले के उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के छात्र–छात्राओं का चयन "यादृच्छिक वर्गबद्ध न्यादर्श विधि द्वारा न्यादर्श का चयन किया गया है। चल रहे हैं।

शैक्षिक आकांक्षा स्तर के तुलनात्क अध्ययन हेतु विभिन्न वर्ग की कार्यशील महिलाओं के बालक–बालिकाओं की शैक्षिक आकांक्षा स्तर का मापन किया गय। शैक्षिक आकांक्षा स्तर पर प्राप्त विभिन्न वर्ग के बालक–बालिकाओं के माध्य, मानक विचलन एवं 'टी' मूल्य का विस्तृत विवरण प्रदर्शित है।

सारणी संख्या 1

विभिन्न वर्ग की कार्यशील महिलाओं के बालक बालिकाओं के शैक्षिक आकांक्षा स्तर के प्राप्तांको के मध्य सार्थकता के अन्तर की जॉच हेतु प्रयुक्त 'टी' मूल्य

	समूह	संख्या	माध्य	मानक विचलन	'टी' मूल्य	P
बालक	उच्च आय वर्ग	20	40.90	12.25	5.37	.01पर सार्थक
	मध्य आय वर्ग	30	31.83	5.80		
	उच्च आय वर्ग	20	40.90	12.25	3.60	.05 पर सार्थक
	निम्न आय वर्ग	50	33.67	8.60		
	मध्य आय वर्ग	30	31.18	5.80	2.20	.05 पर सार्थक
	निम्न आय वर्ग	50	33.67	8.60		
बालिका	उच्च आय वर्ग	50	33.40	7.40	4.06	.01 पर सार्थक
	मध्य आय वर्ग	30	35.81	10.65		
	उच्च आय वर्ग	20	33.40	7.40	1.65	N.S
	निम्न आय वर्ग	50	39.04	8.05		
	मध्य आय वर्ग	20	39.04	10.65	2.38	.05 पर सार्थक
	निम्न आय वर्ग	50	35.81	8.05		
बालक एवं बालिका	उच्च आय वर्ग बालक	20	40.90	12.25	3.71	.01पर सार्थक
	उच्च आय वर्ग बालिका	20	33.40	7.40		
	मध्य आय वर्ग बालक	30	31.18	5.80	7.56	.01 पर सार्थक
	मध्य आय वर्ग बालिका	30	39.04	10.65		
	निम्न आय वर्ग बालक	50	33.67	8.60	1.50	N.S
	निम्न आय वर्ग बालिका	50	35.81	8.05		

सारणी को देखने से ज्ञात होता है कि उच्च एवं मध्य आय वर्ग की कार्यशील महिलाओं के बालकों के शैक्षिक आकांक्षा स्तर में सार्थक अन्तर प्राप्त हुआ है जो .01 स्तर पर सार्थक है। उच्च एवं निम्न आय वर्ग के बालकों के मध्य शैक्षिक आकांक्षा स्तर में अन्तर प्राप्त हुआ जो .05 स्तर पर सार्थ है। इसी प्रकार मध्य एवं निम्न आय वर्ग के बालकों की शैक्षिक आकांक्षा में अन्तर है यह अन्तर .05 स्तर पर सार्थक है।

बालिकाओं के समूह में उच्च एवं मध्य आय वर्ग की की कार्यशील महिलाओं बालिकाओं की शैक्षिक आकांक्षा स्तर में सार्थक अन्तर प्राप्त हुआ है यह अन्तर .01 स्तर पर पाया गया है। उच्च एवं निम्न आय वर्ग की बालिकाओं की शैक्षिक आकांक्षा स्तर में कोई सार्थक अन्तर नहीं है। मध्य एवं निम्न आय वर्ग की बालिकाओं की शैक्षिक आकांक्षा स्तर में अन्तर पाया गया है। यह अन्तर 05 स्तर पर सार्थक है।

उच्च एवं मध्य आय वर्ग की कार्यशील महिलाओं के बालकों के शैक्षिक आकांक्षा स्तर में सार्थक अन्तर प्राप्त हुआ है। यह अन्तर .01 स्तर पर सार्थक है। अतः पूर्व निर्धारित परिकल्पना स्वीकार की जाती है। इसका कारण इन दोनों वर्गो के मध्य समीयता के कारण घर के वातावरण एवं समाज का प्रभाव शैक्षिक आकांक्षा पर पड़ता है।

उच्च एवं निम्न आय वर्ग के बालकों की शैक्षिक आकांक्षा स्तर में प्राप्त अन्तर से स्पष्ट है कि इनकी आकांक्षा स्तर पर पारिवारिक एवं सामाजिक वातावरण का प्रभाव है। निम्न आय वर्ग के बालकों में शिक्षा प्राप्त करने की उच्च आकांक्षा का अभाव है। इसका सम्भावित कारण उनकी आर्थिक सामाजिक प्रस्थिति हो सकती है।

मध्य एवं निम्न आय वर्ग की कार्यशील महिलाओं के बालकों की शैक्षिक आकांक्षा स्तर में प्राप्त अतंर यह स्पष्ट करता है कि दोनों आय वर्ग के बालकों का शैक्षिक आकांक्षा स्तर उनकी आर्थिक प्रस्थिति से प्रभावित है।

इसी प्रकार बालिकाओं के समूह में उच्च एवं मध्य आय वर्ग की बालिकाओं की शैक्षिक आकांक्षा स्तर में अन्तर प्राप्त हुआ है इसका कारण यह हो सकता है कि दोनों वर्गो की पारिवारिक पृष्ठ भूमि एक जैसी है अतः इसका प्रभाव शैक्षिक आकांक्षा स्तर पर पड़ रहा है।

उच्च एवं निम्न आय वर्ग की बालिकाओं की शैक्षिक आकांक्षा का स्तर उनकी सामाजिक आर्थिक स्थिति के अनुसार अधिक ऊँचा है एवं दोनों का आकांक्षा स्तर एक समान है।

मध्य एवं निम्न आय वर्ग की बालिकाओं की शैक्षिक–आकांक्षा स्तर में सार्थक अन्तर प्राप्त हुआ है इससे स्पष्ट होता है कि निम्न आय वर्ग की बालिकाएं मध्य आय वर्ग की बालिकाओं की अपेक्षा उच्च शैक्षिक आकांक्षा स्तर की है इसका कारण यह हो सकता है कि निम्न आय वर्ग की बालिकाओं एवं बालकों का अधिकांश समय अपने विद्यालय में अपने उच्च एवं मध्य वर्ग के मित्रों के साथ व्यतीत होता है। अतः उनकी आकांक्षा स्तर पर उनके समूह के स्तर का सार्थक प्रभाव होता है।

उच्च आय वर्ग के बालक–बालिकाओं के मध्य उनकी शैक्षिक आकांक्षा स्तर में अन्तर प्राप्त हुआ है यह अन्तर .01 स्तर पर सार्थक पाया गया। उच्च एवं मध्य आय वर्ग के बालक–बालिकाओं की शैक्षिक आकांक्षा में प्राप्त अंतर का कारण लिंग भेद हो सकता है बालिकाओं की अपेक्षा बालक उच्च शैक्षिक आकांक्षा रखते हैं। किन्तु निम्न आय वर्ग के

बालक–बालिकाओं की शैक्षिक आकांक्षा का स्तर समान है। निम्न आय वर्ग के बालक–बालिकाओं का शैक्षिक आकांक्षा स्तर समान होने का मुख्य कारण उनकी आर्थिक–सामाजिक प्रस्थिति का एक समान होना है।

इस प्रकार पूर्व निर्मित शुन्य परिकल्पना अस्वीकृत हुई। शुन्य परिकल्पना के अस्वीकृत होने पर वैकल्पिक स्वीकृत की जा सकती है कि विभिन्न आया वर्ग के बालक–बालिकाओं की शैक्षिक आकांक्षा स्तर में सार्थक अन्तर है।

बालक एवं बालिकाओं की शैक्षिक आकांक्षा स्तर का तुलनात्मक अध्ययन किया गया। विभिन्न आय वर्ग के बालकों की शैक्षिक आकांक्षा स्तर का विस्तृत विवरण सारणी 2 में प्रदर्शित है।

सारणी संख्या 2

विभिन्न वर्ग की कार्यषील महिलाओं के बालकों की शैक्षिक आकांक्षा स्तर की तुलना

क्र.सं.		प्राप्तांक	उच्च आय वर्ग	मध्य आय वर्ग	निम्न आय वर्ग
1.	उच्च शै0 आ0 स्तर	54 से ऊपर	9	12	8
2.	औसत से अधिक	45–55	13	23	10
3.	औसत शै0 आ0 स्तर	30–44	21	44	18
4.	औसत से कम	20–29	7	19	16
5.	निम्न शै0 आ0 स्तर	20 से कम	00	00	00
		संख्या = 50		98	52

सारणी से स्पष्ट है कि उच्च शैक्षिक आकांक्षा स्तर रखने वाले बालकों की संख्या तीनों आय वर्ग में एक समान है। इसी प्रकार औसत शैक्षिक स्तर वाले बालकों का अनुपात तीनों वर्ग के समान है।

इसी प्रकार बालिकाओं की शैक्षिक आकांक्षा स्तर का तुलनात्मक अध्ययन किया गया। विभिन्न आय वर्ग की बालिकाओं की शैक्षिक आकांक्षा स्तर का विवरण सारणी संख्या 3 में प्रदर्शित है।

सारणी संख्या 3

विभिन्न वर्ग की कार्यषील महिलाओं के बालकों की शैक्षिक आकांक्षा स्तर की तुलना

क्र.सं.		प्राप्तांक	उच्च आय वर्ग	मध्य आय वर्ग	निम्न आय वर्ग
1.	उच्च शै0 आ0 स्तर	54 से ऊपर	07	22	04
2.	औसत से अधिक	45—55	04	18	13
3.	औसत शै0 आ0 स्तर	30—44	30	26	29
4.	औसत से कम	20—29	04	24	16
5.	निम्न शै0 आ0 स्तर	20 से कम	00	00	00
		संख्या = 48		90	62

सारणी से स्पष्ट है कि उच्च शैक्षिक आकांक्षा स्तर रखने वाले बालिकाओं की संख्या उच्च आय वर्ग में 07, मध्य आय वर्ग में 11 तथा निम्न आय वर्ग में मात्र 04 है। उच्च एवं मध्य आय वर्ग में उच्च शैक्षिक आकांक्षा स्तर वाले बालिकाओं की अपेक्षा औसत शैक्षिक आकांक्षा स्तर वाली बालिकाओं की संख्या अधिक है। इसी प्रकार निम्न आय वर्ग में भी औसत शैक्षिक आंकाक्षा स्तर वाले बालिकाओं की अपेक्षा में उच्च शैक्षिक आकांक्षा स्तर वाले बालिकाओं की संख्या कम है। इससे स्पष्ट है कि तीनों समूहों में उच्च शैक्षिक आकांक्षा स्तर वाले बालिकाओं की अपेक्षा औसत शैक्षिक आकांक्षा स्तर वाले बालिकाओं का अनुपात समान है।

प्रस्तुत अध्ययन में प्राप्त परिणाम से यह स्पष्ट है कि बालक—बालिकाओं की शैक्षिक आकांक्षा स्तर पर उनके सामाजिक—आर्थिक प्रस्थिति, माता—पिता का शैक्षिक स्तर तथा अपने मित्र समूह का गहरा प्रभाव हे। प्राप्त परिणाम से यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि निम्न आय वर्ग के बालक—बालिकाओं में उच्च आय वर्ग के बालक—बालिकाओं की अपेक्षा शैक्षिक आकांक्षा का स्तर निम्न है।

इस प्रकार निष्कर्ष स्वरूप यह कहा जा सकता है कि परिवार की सामाजिक—आर्थिक प्रस्थिति, शैक्षिक सुविधाएं, माता—पिता की शिक्षा का स्तर, पारिवारिक पृष्ठभूमि तथा घरेलू वातावरण एवं मित्र समूह शैक्षिक आकांक्षा स्तर को प्रभावित करने वाले मुख्य कारक होते हैं। शैक्षिक आकांक्षा स्तर को घटाने एवं बढ़ाने में इनकी महत्वपूर्ण भूमिका होती है।

कार्यषील महिलाओं के बालक–बालिकाओं की शैक्षिक निष्पत्ति का तुलनात्मक अध्ययन

प्रस्तुत अध्ययन में विभिन्न वर्ग की कार्यशील महिलाओं लिए हाई स्कूल परीक्षा में प्राप्त अंकों पर विचार किया गया है। विभिन्न वर्ग के बालक–बालिकाओं को प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय श्रेणी प्राप्त करने वालों के रूप में श्रेणीबद्ध किया गया है। इन श्रेणियों के प्रत्येक छात्र–छात्राओं की संख्या का विस्तृत विवरण सरणी संख्या 4 में प्रदर्शित है।

सारणी संख्या 4

हाई स्कूल परीक्षा में प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय श्रेणी प्राप्त करने वाले विभिन्न वर्ग की कार्यषील महिलाओं के बालक–बालिकओं की संख्या की प्रदर्शित सारणी

उच्च आय वर्ग

श्रेणी	**अंकों का प्रतिशत**	**बालक**	**बालिका**
प्रथम श्रेणी	60 प्रतिशत एवं अधिक	30	11
द्वितीय श्रेणी	45 प्रतिशत से 59 प्रतिशत	20	37
तृतीय श्रेणी	45 प्रतिशत से चीचे	00	02
		संख्या =50	संख्या = 50

मध्य आय वर्ग

श्रेणी	**अंकों का प्रतिशत**	**बालक**	**बालिका**
प्रथम श्रेणी	60 प्रतिशत एवं अधिक	30	31
द्वितीय श्रेणी	45 प्रतिशत से 59 प्रतिशत	75	67
तृतीय श्रेणी	45 प्रतिशत से चीचे	03	09
		संख्या=108	संख्या=107

निम्न आय वर्ग

श्रेणी	अंकों का प्रतिशत	बालक	बालिका
प्रथम श्रेणी	60 प्रतिशत एवं अधिक	15	08
द्वितीय श्रेणी	45 प्रतिशत से 59 प्रतिशत	24	29
तृतीय श्रेणी	45 प्रतिशत से चीचे	03	06
		संख्या=42	संख्या= 43

सारणी को देखने से ज्ञात होता है कि उच्च आय वर्ग के 50 बालकों में से 30 प्रथम श्रेणी, 20 द्वितीय श्रेणी एवं 00 बालक तृतीय श्रेणी के अंत प्राप्त करने वाले हैं। इसी प्रकार उच्च आय वर्ग की 50 बालिकाओं में से 11 प्रथम श्रेणी एवं 37 द्वितीय श्रेणी एवं 02 तृतीय श्रेणी के अंक प्राप्त करने वाले हैं।

उच्च आय वर्ग के बालक एवं बालिकाओं में द्वितीय श्रेणी प्राप्त करने वालों की संख्या अधिक है। उच्च आय वर्ग के बालक–बालिकाओं के इन प्राप्तांकों को देखने से यह ज्ञात होता है कि यह बालक–बालिकाऐं प्राप्त सुविधाओं, सहयोग एवं अवसर का पूरा–पूरा उपयोग ठीक ढंग से नहीं कर पा रहे हैं यदि यह बालक–बालिकाएं उपलब्ध सुविधाओं का समुचित उपयोग करें तो इनकी शैक्षिक निष्पत्ति और अधिक बेहतर हो सकती है तथा प्रथम श्रेणी वाले छात्रों की संख्या में वृद्धि हो सकती है।

इसी प्रकार मध्य आय वर्ग के 108 में से 30 प्रथम श्रेणी, 75 द्वितीय श्रेणी तथा 03 बालक तृतीय श्रेणी के अंक प्राप्त करने वाले हैं। मध्य मध्य वर्ग की 137 बालिकाओं में से 31 प्रथम श्रेणी, 67 द्वितीय श्रेणी तथा 09 तृतीय श्रेणी अंक प्राप्त करने वाली है।

मध्य आर्य वर्ग सदैव से अपने बच्चों की शिक्षा के प्रति जागरूक रहा है और बच्चों को अच्छी शिक्षा प्राप्त करने एवं कठिन परिश्रम करने के लिए प्रेरित करना, हर सम्भव उनकी शैक्षिक आवश्यकताओं की पूर्ति करना, शैक्षिक अवसर का अधिकाधिक प्रयोग करना सिखाना, शिक्षा सम्बन्धी वस्तुओं की आपूर्ति करना तथा बच्चों की पढ़ाई में आने वाले व्यवधानों को दूर करना आदि से बच्चों की शैक्षिक निष्पत्ति को अधिकाधिक बेहतर बनाने का प्रयास रहता है। मध्य आय वर्ग के व्यक्ति यह जानते हैं कि आज शिक्षा में किया गया निवेश उनके बच्चों के उज्जवल भविष्य की सुनिश्चतता है अतः मध्य आय वर्ग बच्चों को शिक्षा सम्बन्धी हर प्रकार की सुविधाएं उपलब्ध कराने में संलग्न रहता है जिससे कि उनके बच्चों की शिक्षा सुचारू ढंग से सम्पन्न हो सके। मध्य आय वर्ग अपने बच्चों को उत्तम शैक्षिक वातावरण उपलब्ध कराने के लिए तत्पर रहता है, माता–पिता उन्हें गृह कार्य पूरा करने में सहायता देते हैं तथा अन्य उपयोगी मार्ग निर्देशन करते हैं। इससे बालक–बालिकाओं की पढ़ाई में आने वाली बहुत सी समस्याओं का निराकरण हो जाता है, इनके माता–पिता शिक्षा का महत्व समझते हैं तथा बच्चों के गृह कार्य को पूरा कराने की योग्यता रखने के साथ सहायता देने के लिए उनके पास पर्याप्त समय होता है।

सारणी को देखने से यह ज्ञात होता है कि निम्न आर्य वर्ग के 42 बालकों में से 15 बालक प्रथम श्रेणी, 24 द्वितीय श्रेणी एवं 03 बालक तृतीय श्रेणी के अंक प्राप्त करने वाले

हैं। निम्न आय वर्ग की 43 बालिकाओं में से 08 बालिकाएं प्रथम श्रेणी, 29 द्वितीय श्रेणी तथा 06 तृतीय श्रेणी का अंक प्राप्त करने वाली है। निम्न आय वर्ग के बालक–बालिकाओं में द्वितीय श्रेणी प्राप्त करने वालों की संख्या अधिक है। आज बच्चों को विद्यालय से गृह कार्य अधकि दिया जाता है, अन्य आय वर्ग के बालक–बालिकाओं का गृह कार्य सरलता से पूरा हो जाता है क्योंकि उनके माता–पिता में योग्यता होती है तथा बच्चों की सहायता के लिए पर्याप्त समय होता है किन्तु निम्न आय वर्ग के बालक–बालिकाओं को इन सभी मामलों में बहुत सी समस्याओं का सामना करना पड़ता है क्योंकि इनके माता–पिता अधिक पढ़े लिखे नहीं होते हैं जिससे वे अपने बच्चों को गृह कार्य कराने में सहायता नहीं कर पाते हैं।

यहाँ एक प्रश्न यह उत्पन्न होता है कि 42 बालकों में 15 बालक एवं 43 बालिकाओं में 8 बालिकाएं प्रथम श्रेणी के अंक प्राप्त करने वाली हैं जबकि ये सभी निम्न आय वर्ग से सम्बद्ध हैं। सामान्य पैटर्न यह रहा है कि निम्न आर्थिक–सामाजिक प्रस्थिति वाले बच्चों की शैक्षिक निष्पत्ति निम्न होती है। यह सामान्यीकरण केवल एकीकृत समूह के लिए सत्य सिद्ध हुआ है।

इस क्रम में आगे यह ज्ञात करने के लिए उच्च, मध्य एवं निम्न आय वर्ग समूह के बालक–बालिकाओं की शैक्षिक निष्पत्ति में कोई अन्तर विद्यमान है अथवा नहीं। तीनों समूहों द्वारा हाई स्कूल परीक्षा में प्राप्त अंकों का तुलनात्मक अध्ययन किया।

तुलनात्मक अध्ययन के लिए इनके प्राप्ताकों का माध्य, मानक विचलन, एवं 'टी' मूल्य का विस्तृत विवरण सारणी संख्या 5 में प्रदर्शित है।

सारणी संख्या 5

विभिन्न वर्ग की कार्यषील महिलाओं के बालक–बालिकाओं की शैक्षिक निष्पत्ति के प्राप्तांकों के मध्य सार्थकता के अन्तर की जांच हेतु प्रयुक्त 'टी' मूल्य

	समूह	संख्या	माध्य	मानक विचलन	'टी' मूल्य	P
बालक	उच्च आय वर्ग	20	329.20	32.40	2.20	.05 पर सार्थक
	मध्य आय वर्ग	30	341.26	34.05		
	उच्च आय वर्ग	20	329.20	32.40	1.02	N.S
	निम्न आय वर्ग	50	334.92	27.60		
	मध्य आय वर्ग	30	341.26	34.05	1.43	N.S.
	निम्न आय वर्ग	50	334.92	27.60		
बालिका	उच्च आय वर्ग	20	342.10	28.40	2.01	.05 पर सार्थक
	मध्य आय वर्ग	30	331.34	41.25		
	उच्च आय वर्ग	20	342.10	28.40	3.66	.05 पर सार्थक
	निम्न आय वर्ग	50	319.90	36.10		
	मध्य आय वर्ग	30	331.34	41.25	1.99	.05 पर सार्थक
	निम्न आय वर्ग	50	319.90	36.10		
बा	उच्च आय वर्ग	20	329.20	32.40	2.12	.05 पर

	बालक					सार्थक
	उच्च आय वर्ग बालिका	20	342.10	28.40		
	मध्य आय वर्ग बालक	30	341.10	34.05	2.14	.05 पर सार्थक
	मध्य आय वर्ग बालिका	30	331.34	41.25		
	निम्न आय वर्ग बालक	50	334.92	27.60	2.69	.05 पर सार्थक
	निम्न आय वर्ग बालिका	50	319.90	36.10		

सारणी को देखने से ज्ञात होता है कि उच्च एवं मध्य आय वर्ग के बालकों की शैक्षिक निष्पत्ति में सार्थक अन्तर प्राप्त हुआ है यह अन्तर .05 स्तर पर सार्थक है। उच्च एवं निम्न आय वर्ग के बालकों की शैक्षिक निष्पत्ति में कोई सार्थक अन्तर नहीं प्राप्त हुआ है। मध्य एवं निम्न आय वर्ग के बालकों की शैक्षिक निष्पत्ति में कोई अन्तर नहीं प्राप्त हुआ है।

उच्च एवं मध्य आय वर्ग की बालिकाओं की शैक्षिक निष्पत्ति में सार्थक अन्तर प्राप्त हुआ है यह अन्तर .05 स्तर है। उच्च एवं निम्न आय वर्ग की बालिकाओं की शैक्षिक निष्पत्ति में भी सार्थक अन्तर प्राप्त हुआ है यह अन्तर .01 स्तर पर है। इसी प्रकार मध्य एवं निम्न आय वर्ग की बालिकाओं की शैक्षिक निष्पत्ति में भी सार्थक अन्तर प्राप्त हुआ है यह अन्तर .05 स्तर का है। इसका मुख्य कारण यह हो सकता है कि घरेलू वातावरण अशांत हो। आर्थिक विपन्नता के कारण व उचित शैक्षिक सुविधाओं की अनुपलब्धता के कारण बालिकाओं की शैक्षिक निष्पत्ति प्रभावित होती है।

उच्च आय वर्ग के बालक–बालिकाओं की शैक्षिक निष्पत्ति में अन्तर पाया गया है यह अन्तर .05 स्तर पर सार्थक है। मध्य आय वर्ग के बालक–बालिकाओं की शैक्षिक निष्पत्ति में सार्थक अन्तर पाया गया यह अन्तर .05 स्तर पर सार्थक है। इसी प्रकार निम्न आय वर्ग के बालक–बालिकाओं के मध्य शैक्षिक निष्पत्ति में सार्थक अन्तर प्राप्त होने का मुख्य कारण है कि बालकों की अपेक्षा बालिकाएं प्रतिवर्ष उच्च अंकों से हाईस्कूल की परीक्षा उत्तीर्ण करती हैं, बालकों की तुलना में बालिकाओं की शैक्षिक निष्पति अधिक अच्छी होती है। इसका मुख्य कारण है बालिकाएं शिक्षा के प्रति गम्भीर होती हैं तथा बालिकाओं में अपनी पढ़ाई के प्रति जागरूकता अधिक होती है। दूसरा सम्भावित कारण यह हो सकता है कि बालिकाएं निरन्तर अभ्यास करती हैं तथा अपनी पढ़ाई पर अधिक समय देती हैं इसलिए भी उनकी शैक्षिक निष्पत्ति बहुत उत्तम होती हैं। बालिकाएं सहनशील एवं धैर्यवान होती हैं यही प्रमुख गुण उनकी सफलता का मुख्य कारण है।

बालकों के समूह में उच्च एवं मध्य आय वर्ग को छोड़कर अन्य वर्ग की शैक्षिक निष्पत्ति में कोई सार्थक अन्तर नहीं प्राप्त हुआ परन्तु बालिकाओं के समूह में भी उनकी शैक्षिक निष्पत्ति में कोई सार्थक अन्तर प्राप्त हुआ है किन्तु तीनों आय वर्ग

बालक–बालिकाओं के मध्य शैक्षिक निष्पत्ति में सार्थक अन्तर प्राप्त हुआ है। इस प्रकार पूर्व निर्मित शून्य परिकल्पना अस्वीकृत हुई। शून्य परिकल्पना अस्वीकृत होने पर वैकल्पिक परिकल्पना को स्वीकार किया जा सकता है कि विभिन्न वर्ग के बालक–बालिकाओं के मध्य उनकी शैक्षिक निष्पत्ति में सार्थक अन्तर है।

स्पष्ट होता है कि बालकों की तुलना में बालिकाओं की शैक्षिक निष्पत्ति अधिक उतम है। बालकों की शैक्षिक निष्पत्ति पर घरेलू वातावरण तथा परिवार की आर्थिक स्थिति का प्रभाव स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है किन्तु बालिकाओं की शैक्षिक निष्पत्ति अपने मित्र समूह से प्रभावित है। ऐसा प्रतीत होता है कि सीमित संसाधनों के बावजूद बालिकाओं को उच्च प्राप्तांक के लिए प्रेरित करता है।

इस प्रकार निष्कर्ष स्वरूप यह कहा जा सकता है कि विभिन्न आय वर्ग के बालक–बालिकाओं की शैक्षिक निष्पत्ति पर सामाजिक–आर्थिक स्थिति एवं माता–पिता की शिक्षा का स्तर तथा व्यवसाय का गहरा प्रभाव होता है एवं बालकों की तुलना में बालिकाओं की शैक्षिक निष्पत्ति का स्तर उच्च होता है।

विभिन्न आय वर्ग के बालक–बालिकाओं की शैक्षिक निष्पत्ति को उनके मूल्य, शैक्षिक आकांक्षा स्तर, मानसिक योग्यता एवं शैक्षिक आकांक्षा स्तर स्पष्ट रूप से प्रभावित करते हैं। प्रस्तुत अध्ययन से प्राप्त परिणाम के आधार पर इस प्रभाव की व्याख्या की जा सकती है।

प्रस्तुत अध्ययन के परिणाम की व्याख्या से यह स्पष्ट है कि विभिन्न वर्ग के बालक–बालिकाओं की शैक्षिक निष्पत्ति पर घरेलू वातावरण, परिवार की आर्थिक–सामाजिक प्रस्थिति, माता की शिक्षा का स्तर एवं व्यवसाय तथा उनकी अपनी आकांक्षा, बौद्धिक योग्यता एवं शैक्षिक आकांक्षा स्तर का प्रभाव होता है। प्राप्त परिणाम से स्पष्ट है कि परिवार की आर्थिक प्रस्थिति बौद्धिक योग्यता एवं शैक्षिक निष्पत्ति को प्रभावित करती है ।

सन्दर्भ ग्रंथ सूची

- डॉ0 सरयू प्रसाद चौबे, (2007), शिक्षा की समाजशास्त्रीय आधार, विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा ।
- गुप्ता, एस. पी. गुप्ता, ए., (2004) उच्चतर शिक्षा मनोविज्ञान , शारदा पुस्तक, इलाहबाद
- मगंल, एस. के., (2009) शिक्षा मोविज्ञान, पी.एच.आई. लर्निंग। प्राइवेट लिमिटेड, नई दिल्ली
- पाठक, आर. पी. (2011). उच्च शिक्षा मनोविज्ञान, पियर्सन, दिल्ली ।
- राय, गीता (2011). अधिगमकर्ता का विकास तथा शिक्षण अधिगम प्रक्रिया, आर. लाल बुक डिपो, मेरठ ।
- Bel, Robert L.*Measuring Educational Achievement*, Prentice Hall Pvt. Ltd., New Delhi, 481 pp, 1966
- गुप्ता, डा. एस. पी. आधुनिक मापन एवं मूल्यांकन, शारदा पुस्तक भवन, इलाहाबाद, 1998
- त्रिपाठी, लालबचन मनोवैज्ञानिक अनुसन्धान पद्धति, हरप्रसाद भार्गव, 4/230, कचहरी घाट, 1988
- सिंह, अरुण कुमार मनोविज्ञान, समाजशास्त्र तथा शिक्षा में शोध विधियाँ, मोतीलाल बनारसीदास, नई दिल्ली, 004
- शर्मा, डा. देवदत्त विद्यालय संगठन एवं स्वास्थ्य शिक्षा, विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा, 1990
- पाण्डेय, डा. के. पी. शैक्षिक अनुसन्धान, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी, 2006
- सुखिया, एस. पी. तथा मल्होत्रा वी. पी. शैक्षिक अनुसन्धान के मूल तत्त्व, विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा
- सरीन, डा. शशिकला, सरीन डा. अंजली शैक्षिक अनुसन्धान विधियाँ, विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा
- तिवारी, डा. गोविन्द शैक्षिक एवं मनोवैज्ञानिक अनुसन्धान के मूलाधर, विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा
- सिंह ए. के. शिक्षा में अनुसन्धान, पोइन्टर पब्लिशर्स, 2005
- पाण्डेय, के.पी. शिक्षा तथा मनोविज्ञान में सांख्यिकी, अमिताश प्रकाशन, मेरठ
- सिंह, डा. रामपाल शैक्षिक मूल्यांकन, विनोद पुस्तक मन्दिर आगरा
- कपिल, डा. एच. के. सांख्यिकी के मूल तत्त्व, विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा
- गिलपफोर्ड, जे.पी. फन्डामेन्टल स्टैटिस्टिक्स इन साइकालॉजी एण्ड एजुकेशन, मैक्ग्राहिल बुक कम्पनी, 1982